चित्र नं. 6 (परमपिता+परमात्मा सर्वव्यापी नहीं):-

यहाँ यह बताया गया है कि ईश्वर जब सृष्टि पर आएँगे तो ज्ञान का कोई-न-कोई ऐसा नया प्वॉइण्ट ज़रूर बताएँगे, जिसमें सारी दुनिया भ्रमित हुई पड़ी हो, ऐसी नई बात ज़रूर सुनाएँगे जिसे सारी दुनिया न जानती हो, बल्कि विपरीत बातें ही जानती हो। वह बात यह है कि जब दुनिया में चारों तरफ भगवान को ढूँढ़ा और कहीं नहीं मिला, तो लोगों ने उनके लिए कहना शुरू कर दिया - 'वे तो सर्वव्यापी हैं, जर्रे-2 में भगवान हैं, कण-2 में भगवान हैं, जहाँ देखो वहाँ भगवान हैं;' लेकिन वास्तव में गीता का एक श्लोक ही इस बात के लिए काफी है कि **''तद् धाम परमं मम।''** (कृपया **गीता का श्लोक 15/6** का अर्थ देखिए) अर्थात् मैं वहाँ परमधाम का रहने

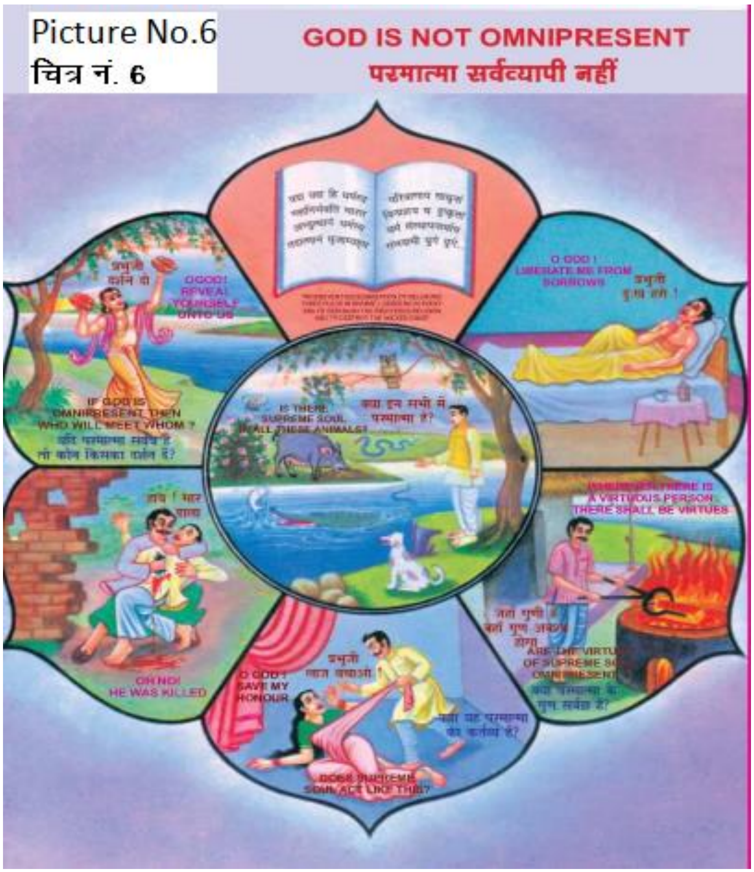

वाला हूँ। दुनिया का सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थ गीता है, जिसकी सबसे ज़्यादा टीकाएँ हुई हैं, उसके एक श्लोक में यह बात साबित हो गई है। गीता में ही एक शब्द आया है **'विभु'**। इस शब्द का उन्होंने इतना बड़ा अर्थ कर दिया कि संसार में चारों तरफ यही बात फैली हुई है कि वे सर्वव्यापक हैं। वास्तव में वि+भु का अर्थ यह है कि वे विशेष रूप से हर मनुष्य-आत्मा की बुद्धि में, 'भू' माना याद के रूप में, अपना स्थान बना लेते हैं। उसका उल्टा अर्थ लगाकर उन्होंने परमपिता सदाशिव ज्योति को सर्वव्यापी कह दिया।

यहाँ बात समझाई गई है कि परमपिता+परमात्मा वास्तव में सृष्टि पर सर्वव्यापी नहीं हैं। गीता और रामायण भी इस बात के प्रमाण हैं। गीता व रामायण में लिखा है कि 'जब-2 इस सृष्टि पर अधर्म का बोलबाला होता है तब-2 मैं आता हूँ।' 'आता हूँ' से साबित ही हो गया कि वे नहीं थे तब तो आए, नहीं तो उनको आने की क्या दरकार थी! दूसरी बात , अभी-2 आपको गीता का जो श्लोक बताया, वह पक्का साबित कर रहा है कि परमपिता+परमात्मा का धाम, नाम, काम ऊँचे ते ऊँचा है, जिसका गायन

भी है- **‘ऊँचा तेरा धाम, ऊँचा तेरा नाम, ऊँचा तेरा काम’।** धाम, काम, नाम- तीनों ही जब ऊँचा है तो वे ऊँचा ही बैठेंगे या नीचे बैठेंगे? इस दुनिया में भी जो राजा होता है वह भी ऊँची गद्दी पर बैठता है, तो हमने राजयोग से राजा बनाने वाले परमपिता+परमात्मा को कण-2 में क्यों मिला दिया? यहाँ चित्र में दिखाया गया है कि ऋषि, मुनि, संन्यासी भाव विभोर होते हैं तो खड़ताले बजाकर कहते हैं- **‘हे प्रभु! हमें दर्शन दो’**; परंतु जब प्रवचन करते हैं तो कहते हैं- ‘परमात्मा सर्वव्यापी है’, ‘आत्मा सो परमात्मा’, ‘शिवोऽहम्’, ‘हम परमात्मा के रूप हैं’, ‘हम ही भगवान हैं’ तो यह बात तर्कसंगत साबित नहीं होती। एक बात पर पक्का रहना चाहिए। यह क्या बात हुई , कीर्तन करने लगे तो प्रभुजी! हमें दर्शन दो। अब दर्शन कहाँ से दें? तुम्हारे अंदर जब खुद ही भगवान बैठे हुए हैं, तुम खुद ही भगवान के रूप हो। यहाँ यह दिखाया गया है कि जो प्रवचन सुनने वाले हैं, वे जिस समय गुरूजी महाराज का प्रवचन सुनते हैं तब तो भाव विभोर होकर कहते हैं- ‘हाँ, परमात्मा सर्वव्यापी है, बहुत अच्छा ज्ञान सुनाया’। घर में पहुँचते ही भाई, भाई की हत्या करने लगे। अब उन्हें भाई-2 के अंदर भगवान नहीं दिखाई दिए ? यह विरोधाभास एकदम इतना कैसे पैदा हो गया?

वास्तव में सबके अंदर अपनी-2 भिन्न संस्कारों वाली आत्मा होती है। परमपिता+परमात्मा उन सबसे सर्वथा अलग हैं। अपनी भारतीय परम्परा में शंकराचार्य की मैथोलोजी अलग है और रामानुजाचार्य की मैथोलोजी अलग है। माधवाचार्य की गीता में बताया गया है कि ‘आत्मा सब अलग-2 हैं और परमात्मा उनसे अलग।’ जबकि शंकराचार्य की गीता में बताया गया है- ‘सर्वं खलु इदं ब्रह्म’ अर्थात् इस दुनिया में जो कुछ भी देखने में आ रहा है, वे सब भगवान का रूप हैं। माधवाचार्य ने बताया कि ‘हर आत्मा में अलग-2 संस्कार हैं’, ये आत्माएँ गर्भ में जब शरीर धारण करेंगी तो ये अपना अलग-2 पार्ट ही बजाएँगी। इनका पार्ट दूसरी आत्मा से मिल नहीं सकता। हम हमेशा शास्त्रों में यह मिसाल देते आए हैं कि हम सब आत्माएँ सागर में बुदबुदा हैं। बुदबुदे सब सागर में समा जाते हैं माने हम उस सागर का अंश हैं। यही कहा ना? लेकिन हम एक बात भूल गए अगर हम बुदबुदे हैं, हम सागर का अंश हैं, तो सागर में से जो चुल्लू भर पानी हमने ले लिया, उसमें जो खारेपने का गुण होगा, वही सागर के पानी में भी होना चाहिए ना? यह पानी हमने पुनः उसमें मिला दिया, दोनों का गुण अभी भी एक ही है; लेकिन हम सबके अंदर ये अलग-2 संस्कार कैसे हैं? यह अलगाव कहाँ से आ गया? और जन्म-जन्मांतर से यह अलगाव बताते चले आ रहे हैं। दूसरी बात, इसका एक और परिहार/निवारण है- आपने कभी चाहा है कि हमारी आत्मा का जो अस्तित्व है, वह हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए, कोई चाहता है? अगर हमारी आत्मा उस सुप्रीम सोल शिव में जाकर लीन हो जाए, सागर में चुल्लू भर पानी मिला दिया गया तो उसका अपना अस्तित्व हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा, फिर शास्त्रों में यह बात कहाँ से आई- **‘‘कल्प-2 लगि प्रभु अवतारा। जब-2 त्रेतायुग होता है तब-2 राम का अवतार होता है।’’**

अजर-अमर तो सभी आत्माएँ हैं। वह बात तो ठीक है, वह एक अलग बात। उनका अस्तित्व, उनका संस्कार सब अलग-2 है; लेकिन हर आत्मा का अनेक जन्मों का जो पार्ट है, वह उस ज्योतिर्बिन्दु रूपी आत्मा के टेप रिकॉर्डर में भरा हुआ है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जब कोई भी आत्मा उतरेगी तो सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अंत तक वह उतने ही जन्म लेगी जितना पहले चतुर्युगी में लिया था। अगर राम की आत्मा होगी तो हर त्रेतायुग में राम के रूप में ही जन्म लेगी। ‘हे 16 कला कृष्ण/नारायण’ की आत्मा होगी तो वह हर सतयुग के आदि में नारायण के रूप में ही राज्य करेगी। इस तरह हर जन्म में आत्मा का शरीर रूपी चोला बदलने का पार्ट निश्चित है। हर 5000 वर्ष के बाद हर आत्मा का पार्ट ज्यों का त्यों पुनरावर्तन होता है।

हर आत्मा सो परमात्मा नहीं है। सुप्रीम सोल शिव भी हमेशा अलग हैं। अगर वे भी जन्म -मरण के चक्र में आने लगें तो हमको छुड़ाने वाला कोई भी नहीं रहेगा। उस अभोक्ता सुप्रीम सोल शिव की तुलना हम भोगी आत्माओं से नहीं की जा सकती। कोई आत्मा हीरो-हीरोइन पार्टधारी बन सकती है, विलेन या साधारण आत्मा का पार्ट बजा सकती है; लेकिन सुप्रीम सोल शिव जैसा पार्ट किसी का नहीं है उनका तो तुरिया पार्ट है। वे

बार-2 इस सृष्टि पर हर युग में आते भी नहीं, जैसा शास्त्र में लिख दिया है- ''**सम्भवामि युगे-युगे**'' अर्थात् मैं हर युग में आता हूँ। अरे! हर युग में आते तो द्वापर के अंत में जब महाभारत युद्ध कराया, कृष्ण के रूप में परमपिता+परमात्मा आए, तो क्या पापी कलियुग की स्थापना करने के लिए आए थे? उनको हर युग में आने की क्या ज़रूरत है? साधारण बाप होता है, वह भी बच्चों के लिए मकान तब तैयार करता है जब मकान पुराना हो जाता है, उस पुराने मकान से काम नहीं चलता। जब तक काम चल सकता है तब तक मरम्मत कराता रहता है। इस सृष्टि रूपी मकान की भी यही हालत है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि ये धर्मपिताएँ समय-2 पर आकर सृष्टि की जगह-2 मरम्मत करते रहे किसी ने अरब देश में आकर मरम्मत की, किसी ने युरोपीय देशों में की, किसी ने चीन-जापान में की। नया मकान तो किसी ने नहीं बनाया , नई सृष्टि तो नहीं बनाई। यह मरम्मत कितने दिन चलेगी? कुछ समय तक उन धर्मों का प्रभाव रहता है, फिर वह खलास। आख़रीन तो फिर भी उसी सुप्रीम सोल शिव बाप को, जो धर्मपिताओं के भी बाप हैं, बापों के भी बाप हैं, इस सृष्टि पर उतरना ही पड़ता है। वे आकर इस सृष्टि का आमूल-चूल परिवर्तन कर देते हैं। तो वे सर्वव्यापी नहीं हैं , वे तो इस सृष्टि पर मुकर्रर रूप से हीरो पार्टधारी अर्जुन/आदम में प्रवेश करके पार्ट बजाते हैं।

आपने '**जीज़स**' वा '**क्राइस्ट**' का नाम सुना? आखिर ये दो नाम क्यों ? क्रिश्चियन्स लोग मानते हैं कि वह व्यक्ति, जो पहले ख्यातिप्राप्त नहीं था , उसका नाम '**जीज़स**' था, फिर जब ख्यातिप्राप्त हो गया तब उसका नाम '**क्राइस्ट**' पड़ गया। इसका रहस्य कोई नहीं जानता। यह रहस्य परमपिता +परमात्मा शिव आकर बता रहे हैं कि कोई भी नई आत्मा ऊपर से उतरती है तो जिसमें भी प्रवेश करती है, उसका नाम बदल देती है। जैसे पहले '**नरेन्द्र**' नाम था, बाद में '**विवेकानन्द**' नाम पड़ गया। आचार्य रजनीश का भी ऐसे ही हुआ है। पहले यह एक साधारण लेक्चरर थे। जब आत्मा ने प्रवेश किया तो '**आचार्य रजनीश**' नाम पड़ गया। तो हर आत्मा जो ऊपर से नीचे उतरती है, वह जिसमें प्रवेश करती है, उसको कनवर्ट करके अपने धर्म में खींच ले जाती है और वह आधारमूर्त देवात्मा जिसमें प्रवेश किया, वह भारत की ही 33 करोड़ देवों में से कोई आत्मा होती है। ऐसे ही दूसरे-2 धर्मों में कनवर्शन या परिवर्तन हुआ। भारतवासियों से ही कनवर्ट होकर दूसरे -2 धर्म पनपे हैं और वृद्धि को पाए हैं।

कहने का मतलब यह हुआ कि उस सुप्रीम सोल शिव की तुलना हम भोगी आत्माओं से नहीं हो सकती। हम आत्माओं के मुकाबले वे हमेशा तुरीया हैं। वे तो सुख भी नहीं भोगते तो दुःख भी नहीं भोगते। वे सुख-दुःख से हमेशा ही परे रहने वाले हैं। हाँ, यह बात ज़रूर है कि जब वे इस सृष्टि पर आकर राजयोग सिखाते हैं तो ऐसी पढ़ाई पढ़ाते हैं कि हम आत्माएँ नं०वार पुरुषार्थ अनुसार इस स्टेज को प्राप्त करें कि इस सृष्टि पर रहते हुए भी, दुःख-सुख में रहते हुए भी अपनी ऐसी अवस्था बना लें कि दुःख के समय हम दुःखी न हों और सुख के समय हम प्रसन्न न हों जिसका नाम गीता में '**स्थितप्रज्ञ**' दिया गया है; लेकिन हमारी वह अवस्था हमेशा के लिए नहीं रहेगी; परन्तु उस शिव की हमेशा के लिए रहेगी। वह सुप्रीम सोल है, तो फिर आत्मा-परमात्मा एक कहाँ हुए? परमात्मा सर्वव्यापी कहाँ हुए? सुप्रीम सोल शिव तो हमेशा अलग ही हुए।

शिव की तुलना ऊँच ते ऊँच त्रिदेवों से भी नहीं की जा सकती। इन त्रिदेवों की यादगार में ''**झण्डा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। विश्व विजय करके दिखलावे।**''- यह बोलते तो हैं; लेकिन यह नहीं जानते हैं कि वे तीन शरीर रूपी वस्त्र कौन -से हैं, जिन वस्त्रों ने सारे विश्व में तहलका/खलबली मचाई थी , सारे विश्व में विजय करके दिखलाई थी? वास्तव में, वे शरीर रूपी वस्त्र 'ब्रह्मा, विष्णु, शंकर'- ये तीन ही हैं। उनके संकेतक रंग भी वैसे ही दिखाए गए हैं। ऊपर वाला केसरिया रंग है 'शंकर'- क्रांति का सूचक। बीच वाला सफेद वस्त्र सत्वगुणी 'विष्णु' का सूचक है। नीचे वाला हरा वस्त्र 'ब्रह्मा' का सूचक है। जैसे गाँधीजी कहते रहे- '**रामराज्य आएगा, रामराज्य लायेंगे**', बल्कि और ही रावण राज्य आ गया। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा हमेशा चिल्लाते रहे- '**रामराज्य लाएँगे, स्वर्ग आएगा, वैकुण्ठ आएगा और स्वर्ग आने ही वाला है।**' अब उस स्वर्ग की जगह

ब्रह्माकुमारी आश्रमों में चेकिग की जाए तो पता पड़ेगा कि रौरव नर्क बन रहा है ।

इसलिए ब्रह्मा की मूर्तियाँ, मंदिर व पूजा नहीं होती; क्योंकि तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने ही ब्रह्मा की दाढ़ी की लाज नहीं रखी, जबकि शंकर और विष्णु के मंदिर और मूर्तियाँ बनाकर आज सारे विश्व में पूजा की जा रही है।